पुस्तक समीक्षा

शब्द कुछ कहते हैं : यथार्थबोधी कविताओं का एक उत्तम संग्रह

समीक्षक
डॉ. किशोरीशरण शर्मा

भाव प्रवण कवि श्री अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री' विरचित कविता-संग्रह 'शब्द कुछ कहते हैं' का अवलोकन किया। कुल लगभग नब्बे लघु कविताओं का यह संग्रह विभिन्न विषयों पर केन्द्रित है। विद्वान मनीषियों की मान्यता है कि कविता का उद्भव सुख-दुःख की अनुभूतियों से उपजे द्वन्द से होता है। अनुभूतियाँ जब द्रवित होकर संवेदना में परिवर्तित हो जाती है, कवि को शब्दों में बांधने को विवश करती हैं। उन शब्दों में परिस्थितियों के अनुकूल भूत का अध्ययन, वर्तमान की दृष्टि और भविष्य की संभावनाएँ निहित होती हैं। इसलिये कवि सामान्य व्यक्ति से भिन्न होता है, श्रेष्ठ होता है। ऐसा आचार्यो का मत है। परोक्ष रूप में उसमें वह शक्ति समाविष्ठ होती है जो भावों का सृजन करके शब्दों में रूपान्तरित करने को उद्वेलित करती है। फलस्वरूप कवि का धर्म ही काव्य-सृजन हो जाता है। मेरे विचार में युवा कवि अजयश्री की कविताएँ भी उनकी गहन अनुभूतियों की देन हैं। मुझे प्रसन्नता है कि इन स्वतंत्र लघु रचनाओं में अणु सा प्रभाव है। अनेक ऐसी रचनाएँ हैं जिनका पाठ करते हुए मुझ सा पाठक ठहर जाता है तथा उनमें प्रयुक्त बिम्बों और प्रतीको से साक्षात्कार करने लगता है। संग्रह की लगभग सभी रचनाएँ मुक्त छन्द विधा में सृजित हैं फिर भी उनमें अनेक ऐसी रचनाएँ हैं जो छन्द सा आनन्द देती हैं। उन रचनाओं में कवि की पैनी दृष्टि, सोच और आस्था मुखरित हुई है।

इस संग्रह की प्रथम रचना 'ध्रुव सत्य' में आकाश में एक सितारा की भांति स्थिर बनने की अपेक्षा हवा बनने का संदेश है। हवा को सितारा से महत्वपूर्ण कवि ने बताने का प्रयास किया है। हवा समस्त चेतन-अचेतन की साँस-साँस में होती है। जीवन प्रदाता है वह। यह कवि की नई सोच है। इसी प्रकार आशा, अल्ला रखे सब की शान,

मैं नहीं हम, एक दाग काल के कपाल पर, चाँद का दर्द तथा बीमा, शब्द इत्यादि रचनाओं में कवि नवीन चिन्तन के साथ उपस्थित हुआ है। 'चाँद का दर्द' की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

चाँद कहते हैं - सब पर भाता नहीं,
लाख कर लूँ दाग जाता नहीं।
मैंने कहा चाँद से, यूँ घबराते नहीं,
अंधेरों से लड़ने वालों के दाग देखे जाते नहीं।

चाँद को कवि ने प्रतीक रूप में लिया है। उसकी प्रभा और शीतलता की अनुभूति उसके दाग को परोक्ष में कर देती है। कुप्रवृत्ति का व्यक्ति भी अच्छे कर्मों के द्वारा प्रतिष्ठित हो सकता है। यह भाव सामाजिक सरोकार से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार 'बीमा' रचना की निम्नांकित पक्तियों में कितनी सार्थकता है-

जीने से पहले आदमी मरने की सोचता है,

तभी बीमा वालों के कहने पर अपनी पूँजी उसे सौंपता है। इस कृति में संग्रहीत अमर कृति, सतधर्म अमर हो जाता है, मसीहा, खुशी मनायें हम कैसे, मैं चिल्लाता रहा, सूर्योदय, आम आदमी, गणतंत्र अभी बच्चा है, वह सृजन करती, समान कानून इत्यादि कविताओं में कवि ने सामाजिक और मानवीय यथार्थ को मुखरित किया है। व्यंग्य एक चोटीली विधा है। कवि ने अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के लिए संग्रह की अनेक रचनाओं में उसका बड़े संजीदगी के साथ उपयोग किया है। 'गणतंत्र अभी बच्चा है' की कुछ पंक्तियां देखें-

कैसे मान लें पानी हमारा
प्रदूषित नहीं होगा?
जीवन की ठोकरों से तन गंदा,
मन मैला नहीं होगा?
भुखमरी, लाचारी,
लुटती इज्जत और भ्रष्टाचार
सब खत्म कर देंगे,
भ्रम अच्छा है,
पैंसठ वर्ष का हो गया 'गणतंत्र'
पर दिखता अभी बच्चा है।

कवि ने मनुष्य जीवन में काम आने वाले वस्तुओं को भी प्रतीक रूप में उपयोग में लाया है जिसका सृजन मनुष्य ने ही किया है। चप्पलें, सिलवटें, साबुन, शो प्लांट, तम्बाकू, एम्बुलेंस, जैसी रचनाओं के भीतर मानवीय त्रासदी की पीड़ा छिपी हुई है। इनमें कल्पना नहीं, अनुभूत का प्रस्फुटन हुआ है। 'साबुन' शीर्षक रचना की पक्तियाँ देखें-

परिवर्तन है स्वरूप उसका,
नित लोग नये मिलते हैं,
ऊँच-नीच, धर्म-जाति का भेद नहीं,
सब स्नेह पूर्वक छलते हैं।
घिस-घिस कर वह जग के तन धोता है,
जैसे पुण्यकर्म पापी के मन धोता है।

प्रस्तुत कविता संग्रह के अन्य कविताएँ भी कवि के भावावेश की उपज हैं। उन्होंने माँ की ममता और त्याग का भी सुंदर चित्र खींचा है तथा धर्मपत्नी के पातिव्रत धर्म और पति के प्रति समर्पण भाव को मनोरम ढ़ंग से उकेरा है। मैंने प्रारम्भ में कविवर अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री' को एक भाव प्रवण कवि के रूप में संबोधित किया है। इसका तात्पर्य है कि वह कविता में भाव पक्ष के प्रति विशेष समर्पित हैं। कवि की एक अत्यंत प्रचलित परिभाषा है - "रसात्मकं वाक्यं काव्यं।" अर्थात् 'रस युक्त वाक्य ही कविता है।' कविवर अजयश्री जी की कविताएं इस परिभाषा के अनुरूप खड़ी उतरती हैं। उनकी अधिकांश कविताएं लोक एवं जमीन से जुड़ी हुई हैं। उनमें यथार्थबोध के माध्यम से आदर्शोन्मुख विकास का संदेश है।

यहाँ यह उल्लेख करना भी समीचीन है होगा कि प्रस्तुत काव्यकृति के पूर्व अजयश्री जी की काव्यकृति 'आप का सच' सन् 2012 ई. में प्रकाशित और चर्चित हो चुकी है जिस पर हिन्दी भारती के वरेण्य विद्वान डॉ. शंभुनाथ जी, डॉ. विनोद चन्द पाण्डेय 'विनोद' जी तथा डॉ. सुधाकर 'अदीब' जी का आशीर्वाद उनको प्राप्त है। मैं आशान्वित हूँ कि प्रस्तुत काव्यकृति 'शब्द कुछ कहते हैं' भी अपनी भाव प्रवणता के फलस्वरूप पाठकों के मानस में महत्वपूर्ण स्थान बनायेगी और 'अजयश्री' जी को यश प्राप्त होगा।

अन्त में मैं कहना चाहूँगा कि अजयश्री जी में हिन्दी कविता और साहित्य सृजन के प्रति अद्भुत लगन और उत्साह है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में उनकी लेखनी से नवोन्मेषी कृतियाँ प्रसूत होंगी और हिन्दी भारती का भण्डार समृद्ध होगा।

समीक्षक : डॉ. किशोरीशरण शर्मा 'साहित्यांगन',13-रेवती विहार, सेक्टर-14, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 मोब.8004750027